

अध्याय-3

सर्वेक्षण

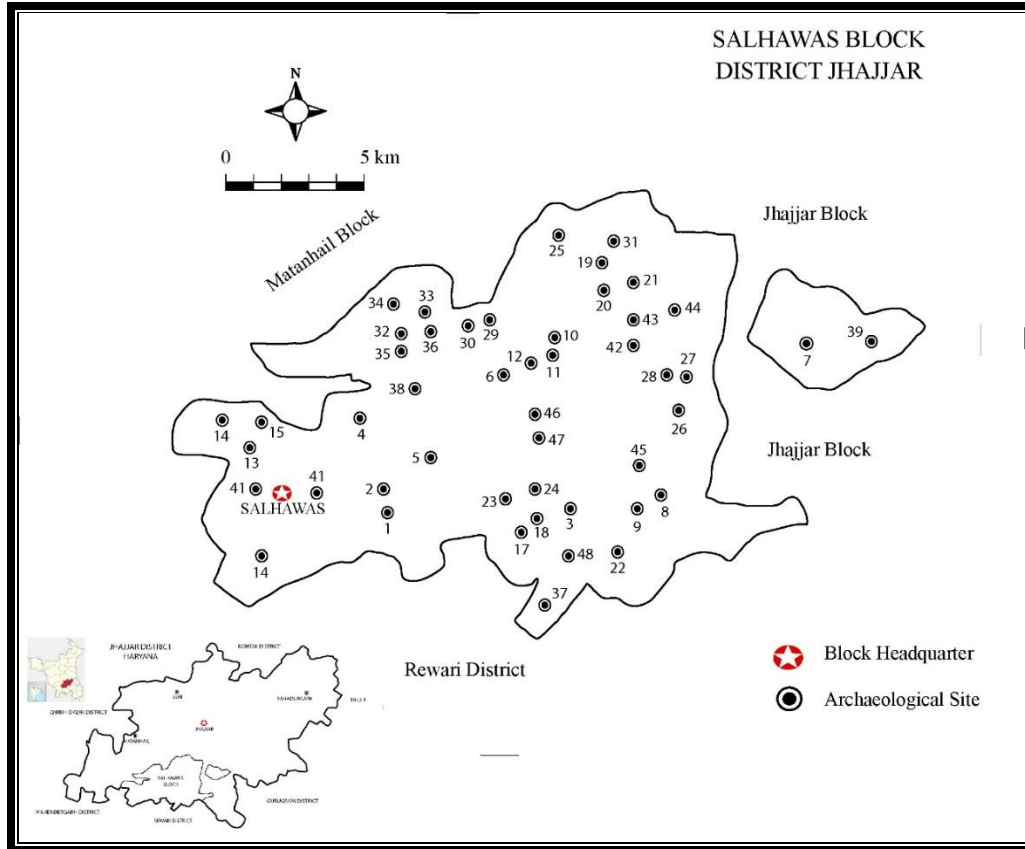
पुरातात्विक सर्वेक्षण किसी क्षेत्र विशेष के इतिहास एवं संस्कृति के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। सर्वेक्षण की अनेक विधियां हैं जिनमें से गांव से गांव सर्वेक्षण एक विधि है। सर्वेक्षण करने से पूर्व यह आवश्यक है कि किसी क्षेत्र के साहित्य और प्रकाशित शोध कार्यों के विषय में जानकारी प्राप्त की जाए। उपर्युक्त जानकारी शोध-प्रारूप को तैयार करने एवं हजारों वर्ष पूर्व बसी प्राचीन संस्कृतियों के विषय में जानने के लिए उपयोगी है। पुरास्थलों से पुरावशेषों को प्राप्त करने तथा अतीत की क्रियाओं को समझने के लिए दो महत्वपूर्ण विधियां हैं जिनमें से सर्वेक्षण एक महत्वपूर्ण विधि है जो प्राचीन पुरास्थलों की मानवीय गतिविधियों का निरीक्षण, रिकॉर्डिंग तथा धरातल से प्राप्त मृदभांड एवम् अन्य सांस्कृतिक सामग्री का संग्रहण करता है। सर्वेक्षण के माध्यम से प्राचीन पुरास्थलों से प्राप्त सांस्कृतिक सामग्री का विश्लेषण कर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है। सांस्कृतिक पुरावशेष न केवल पुरातत्व के अस्तित्व की जानकारी देते हैं बल्कि सांस्कृतिक क्रम पर भी प्रकाश डालते हैं। पुरातात्विक सर्वेक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जो प्राचीन संस्कृतियों के बारे में सजीव चित्रण प्रस्तुत करती है। सर्वेक्षण से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री के आधार पर विभिन्न संस्कृतियों या समाजों के भिन्न-भिन्न पक्षों जैसे सांस्कृतिक रीति-रिवाजों, बस्ती अधिवास योजना, जीविकोपार्जन व्यवस्था, सांस्कृतिक विकास, पर्यावरणीय दशाओं का अध्ययन किया जाता है जो विभिन्न संस्कृतियों के मध्य सम्बंध एवम् परिवर्तन को जानने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पुरातात्विक सर्वेक्षण का मुख्य ध्येय मानव व्यवहार एवम् सांस्कृतिक सामग्री के मध्य सम्बंध को जानना है।

इस लघु शोध के अंतर्गत झज्जर जिले के साल्हावास खंड का सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य इस क्षेत्र में स्थित पुरातात्विक पुरास्थलों के संदर्भ में प्राथमिक आंकड़े और पुरावशेष प्राप्त करना रहा और साथ ही पुरावशेषों का व्यवस्थित तरीके से अध्ययन भी किया गया। सर्वेक्षण के परिणाम स्वरूप 48 पुरास्थल प्रतिवेदित किए गए हैं। 48 पुरास्थलों में से 02 पुरास्थल बहु-सांस्कृतिक कालीन हैं जिनमें से ढाकला-3 पुरास्थल आरंभिक हड़प्पाकाल, उत्तर हड़प्पाकाल तथा पूर्व मध्यकाल से संबंधित है तथा कासनी-1 पुरास्थल उत्तर हड़प्पाकाल एवं पूर्व मध्यकाल से संबंधित है। एक पुरास्थल ढाकला-3 आरंभिक हड़प्पाकालीन है तथा 5 पुरास्थल उत्तर हड़प्पाकालीन संस्कृति

से संबंधित हैं। कुल 45 पुरास्थल पूर्व मध्यकालीन संस्कृति से संबंधित हैं। सर्वेक्षण में नए पुरातात्विक पुरास्थल न्यौला, मुन्देरा-4, मुन्देरा-5 खोजे गए हैं। कुछ पुरास्थल जो शोधकर्ताओं द्वारा पूर्व में प्रतिवेदित किए गए थे, उनका सांस्कृतिक क्रम वर्तमान शोध से मेल नहीं खाता जैसे-भूरावास-1, बिठला, छप्पार-2, ढाकला-1, ढाकला-3, कनवा, कासनी-1, कासनी-2, खुड्डन-2, कोहंद्रवाली-1, कोहंद्रवाली-2, कुंजिया, समासपुर-माजरा-1, तुम्बाहेड़ी।

सालहावास खंड के पुरातात्विक पुरास्थलों का सांस्कृतिक क्रम इस प्रकार है:

क्रम	सांस्कृतिक क्रम	संख्या
1.	आरंभिक हड़प्पाकाल	01
2.	उत्तर हड़प्पाकाल	05
3.	पूर्व मध्यकाल	45



चित्र: 3.1 सालहावास खंड के पुरास्थल

1. अंबोली-1

अवस्थिति: (28°26'42" उ. 76°29'40" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 196 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

अंबोली गांव साल्हावास से लगभग 3 किलोमीटर पूर्व में साल्हावास-धरौली सड़क मार्ग पर स्थित है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

अंबोली पुरास्थल गांव के दक्षिण में लगभग 100 मीटर की दूरी पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री शुधन सिंह के पुत्र श्री रामनिवास के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 6 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा लगभग 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को *कालिया ब्राह्मण* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि कार्य किया जाता है। कृषि कार्य हेतु खेत को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 14)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी यहाँ पर पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। इस पुरास्थल से अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित एक अज्ञात मृणमूर्ति मिली है।

2. अंबोली-2

अवस्थिति: (28°27'07" उ. 76°29'56" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 213.90 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

यह पुरास्थल हीरा सिंह के पुत्र श्री प्रदीप कुमार एवं कुलदीप कुमार के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 8 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 2 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। कृषि हेतु पुरास्थल को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित प्रतिवेदित हैं (राजेश कुमार 2016: 37)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं।

3. बाबेपुर

अवस्थिति: (28°26'29" उ. 76°33'46" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

बाबेपुर गांव झज्जर से लगभग 20 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

बाबेपुर पुरास्थल गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में रेतीले टीले पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री भरते सिंह के पुत्र श्री सतवीर सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र से लगभग 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *चमरा* के नाम से जानते हैं। पुरास्थल के पास चमरा देवी का मंदिर भी बना हुआ है। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। कृषि हेतु खेत को समतल बनाने के लिए खेत से मिट्टी उठाई गई है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। कटे हुए अनुभाग में लगभग 1 मीटर तक सांस्कृतिक जमाव दिखाई देता है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 40)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। सर्वेक्षण से मृदभांडों के अतिरिक्त बालुका पत्थर पर निर्मित एक बाँट (बटखरा) मिला है।

4. भूरावास

अवस्थिति: (28°28'16" उ. 76°29'38" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 202.90 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

भूरावास गांव झज्जर से लगभग 24 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 2.5 किलोमीटर उत्तर पूर्व में स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

भूरावास पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित है। यह पुरास्थल श्री चन्दगी सिंह के पुत्र श्री महेंद्र सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा लगभग 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को दोहबट के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। संपूर्ण पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल पूर्णतः अस्त-व्यस्त हो गया है तथा इस पुरास्थल पर मकान भी बने हुए हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल एवं पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 50)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी केवल पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं।

5. बिठला

अवस्थिति: (28°27'44" उ. 76°31'34" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 223.114 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

बिठला गांव झज्जर से लगभग 23 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 6 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। अंबोली से बिठला के लिए सड़क मार्ग निकलता है।

इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है। बिठला पुरास्थल गांव से लगभग 50 मीटर दक्षिण-पूर्व दिशा में स्थित है। यह पुरास्थल श्री हरनाम सिंह के पुत्र श्री रामकरण के खेतों में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 3 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *कुरड़ा-की-बात* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 50)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान केवल पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही प्रकाश में आए हैं।

6. चांदोल

अवस्थिति: (28°29'22" उ. 76°32'28" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 227.99 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

चांदोल गांव झज्जर से लगभग 20 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से ढाकला के लिए मार्ग निकलता है, जिसके माध्यम से चांदोल पहुंचा जा सकता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 12 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

पुरास्थल चांदोल गांव से लगभग 300 मीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री बस्ती के पुत्र श्री अमर सिंह के खेतों में नहर के पास स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 54)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

7. चांदपुर

अवस्थिति: (28°29'23" उ. 76°39'27" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.98 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

चांदपुर गांव झज्जर से लगभग 14 किलोमीटर दक्षिण में झज्जर-रेवाड़ी सड़क मार्ग पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 27 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

पुरास्थल चांदपुर गांव से लगभग 200 मीटर पूर्व में सरकारी स्कूल के नजदीक स्थित है। पुरास्थल के क्षेत्र को हरियाणा सरकार के ग्रामीण विकास विभाग ने गरीबी रेखा से नीचे आने वाले परिवारों को आवास हेतु आवंटित कर दिया है। यह पुरास्थल लगभग 15 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 3-4 मीटर तक ऊंचा है। पुरास्थल का आंशिक भाग पंचायती जमीन के अंतर्गत आता है तथा शेष को समतल बनाकर कृषि की जाती है। कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल को समतल बना लिया गया है। पुरास्थल के अनुभाग में लगभग 1 मीटर नीचे तक सांस्कृतिक अवशेष देखे जा सकते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 15-16)। वर्तमान

सर्वेक्षण के दौरान भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित हॉपस्कोच मिला है।

8. छप्पार-1

अवस्थिति: (28°27'13" उ. 76°35'23" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 223.418 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

छप्पार गांव झज्जर से लगभग 23 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से सुबाना के लिए मार्ग निकलता है जो छप्पार गांव तक पहुंचाता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

पुरास्थल छप्पार गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर उत्तर पूर्व दिशा में स्थित है। यह पुरास्थल श्री सूबे नंबरदार के पुत्र श्रीपल्ली के खेतों में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल को समतल कर इस पर खेती की जाती है। पुरास्थल की दशा बुरी है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 55)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

9. छप्पार-2

अवस्थिति: (28°26'27" उ. 76°34'38" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 223.99 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

छप्पार-2 पुरास्थल गांव से लगभग 2 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल जैतपुर से सरोला को जाने वाली सड़क मार्ग के नजदीक स्थित है। यह पुरास्थल गतरो देवी के पुत्र श्री अतर सिंह के खेत में नहर के समीप स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं।

(राजेश कुमार 2016: 55-56)। वर्तमान सर्वेक्षण से भी पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं।

10. ढाकला-1

अवस्थिति: (28°30'29" उ. 76°32'18" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.066 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

ढाकला गांव झज्जर से लगभग 17 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से लगभग 1 किलोमीटर उत्तर में सुबाना से ढाकला के लिए सड़क मार्ग निकलता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में 3 प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

ढाकला-1 पुरास्थल गांव से लगभग 2.5 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। यह श्री रघुवीर सिंह के पुत्र श्री मूलचंद के खेत में स्थित है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र की अपेक्षा 1 मीटर ऊंचा है। पुरास्थल को समतल बनाकर इस पर कृषि की जाती है तथा कृषि के कारण पुरास्थल आंशिक रूप से अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 63-64)। परंतु वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान केवल उत्तर हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक अवशेष प्राप्त हुए हैं। इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में बालुका पत्थर पर निर्मित सिल-बट्टा तथा पकी मिट्टी की चूड़ियाँ मिली हैं।

11. ढाकला-2

अवस्थिति: (28°30'25" उ. 76°33'40" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 221 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

ढाकला-2 पुरास्थल एक ऊंचे टीले के रूप में स्थित है जो गांव से लगभग 2 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। यह पुरास्थल श्री गोपी पंडित के पुत्र श्री मुरारी के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़

क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र से लगभग 2 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को *सुरखपुर खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। कटे हुए अनुभाग में लगभग 0.50 मीटर तक सांस्कृतिक अवशेष देखे जा सकते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 64)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

12. ढाकला-3

अवस्थिति: (28°28'35" उ. 76°32'35" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 221.086 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

ढाकला-3 पुरास्थल गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल ढाकला-बिठला सड़क मार्ग के बायीं तरफ स्थित है। यह पुरास्थल श्री रघुवीर सिंह के पुत्र श्री राजपाल के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आस पास के क्षेत्र की अपेक्षा लगभग 1.5 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। पुरास्थल को समतल बनाकर इस पर खेती की जाती है। यह पुरास्थल आंशिक रूप से अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष गणेश्वर (राजस्थान) के गैरिक मृदभांड संस्कृति से मेल खाते हैं तथा यहां पर पूर्व मध्यकाल सांस्कृतिक अवशेष भी मिले हैं (ढाका 1990-91: 16)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान आरंभिक हड़प्पाकालीन, उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष प्रकाश में आए हैं। इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित चूड़ियाँ तथा कांचली मिट्टी की चूड़ियाँ भी मिली हैं।

13. ढाना

अवस्थिति: (28°27'52" उ. 76°27'12" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 224.94 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

ढाना गांव झज्जर से लगभग 36 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 1 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

ढाना पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल साल्हावास से ढाना को जाने वाली सड़क मार्ग के समीप स्थित है। यह पुरास्थल श्री मीर सिंह के पुत्र पूर्व सरपंच श्री विजय सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल लगभग अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 16-17)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

14. धनिया

अवस्थिति: (28°25'43" उ. 76°27'13" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 236 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

धनिया गांव झज्जर से लगभग 31 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 4 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

यह पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री भगवान सिंह के पुत्र श्री गोपी नंबरदार के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 2 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 17)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

15. धनीरवास-1

अवस्थिति: (28°27'41" उ. 76°27'59" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 209.90मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

धनीरवास गांव झज्जर से लगभग 36 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 1.5 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में स्थित है। साल्हावास गांव से धनीरवास के लिए सड़क मार्ग निकलता है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

पुरास्थल धनीरवास-1 गांव से लगभग 800 मीटर दक्षिण-पूर्व में साल्हावास-मातनहेल सड़क मार्ग पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री नंदा सिंह के पुत्र श्री करतार के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा लगभग 4 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को खेड़ा के नाम से जानते हैं। पुरास्थल के अधिकतर क्षेत्र पर कृषि की जाती है तथा शेष भाग पर सीमेंट सेरामिक फैक्ट्री बनी हुई है। जिससे पुरास्थल आंशिक रूप से अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 66)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

16. धनीरवास-2

अवस्थिति: (28°28'04" उ. 76°26'45" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 213.30 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

पुरास्थल धनीरवास-2 गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल पूर्व सरपंच श्री स्वरूप सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 8 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा लगभग 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को खेड़ा के नाम से जानते हैं। पुरास्थल को समतल बनाकर इस पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 17)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

17. धरौली-1

अवस्थिति: (28°25'34" उ. 76°30'57" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 227.99 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

धरौली गांव झज्जर से लगभग 25 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। पुरास्थल धरौली-1 गांव से लगभग 200 मीटर पश्चिम में स्थित है। इस पुरास्थल का आंशिक भाग पंचायती भूमि तथा शेष श्री निहाल सिंह के पुत्र श्री धनराज सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 6 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 1 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल लगभग अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 70)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

18. धरौली-2

अवस्थिति: (28°26'05" उ. 76°31'17" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 229 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

पुरास्थल धरौली-2 गांव से लगभग 500 मीटर उत्तर में स्थित है। यह पुरास्थल रेतीले टीले पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री मनफूल सिंह के पुत्र श्री ईश्वर सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 2 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा धान की खेती हेतु खेत की मिट्टी को उठा कर समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। कटे हुए अनुभाग में लगभग 1.50 मीटर तक मृदभांड तथा अन्य सांस्कृतिक अवशेष दिखाई देते हैं। सांस्कृतिक अवशेषों की दृष्टि से पुरास्थल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यहां से प्राप्त सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 70)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

19. फतेहपुरी

अवस्थिति: (28°31'08" उ. 76°35'08" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 213.96 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

फतेहपुरी गांव झज्जर से लगभग 12 किलोमीटर दक्षिण में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। कासनी व ढाकला से फतेहपुरी के लिए सड़क मार्ग निकलता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 21 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

फतेहपुरी पुरास्थल गांव से लगभग 700 मीटर दक्षिण में स्थित है। पुरास्थल के लिए कासनी व ढाकला दोनों गांव से सड़क मार्ग निकलता है। यह पुरास्थल श्री करण सिंह के पुत्र श्री बलवान सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 1 मीटर से भी कम ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *दादा भैया वाला खेड़ा* के नाम से जानते हैं। यहां पर दादा भैया का मंदिर भी बनाया गया है। संपूर्ण पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल की संस्कृति से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 75)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

20. कासनी-1

अवस्थिति: (28°30'29" उ. 76°35'00" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 225.540 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

कासनी गांव झज्जर से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 17 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

कासनी-1 पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल कासनी से कनवा जाने वाली सड़क मार्ग पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री सुमेर सिंह के पुत्र श्री जितेंद्र सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 1.5 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। धान की खेती हेतु मिट्टी उठाने तथा नहर निर्माण के कारण पुरास्थल लगभग अस्त-व्यस्त हो गया है। लगभग 1.5 मीटर तक की मिट्टी उठाई गई है। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा इसके अतिरिक्त इस पर मकान भी बने हुए हैं जिससे पुरास्थल लगभग अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष गणेश्वर (राजस्थान) की गैरिक मृदभांड परम्परा से समानता रखते हैं तथा पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष भी मिले हैं (ढाका 1990-91: 18-19)। जबकि वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन संस्कृति से संबंधित सांस्कृतिक अवशेष भी मिले हैं।

21. कासनी-2

अवस्थिति: (28°31'24" उ. 76°36'01" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 225.857 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

कासनी-2 पुरास्थल गांव से लगभग 2 किलोमीटर उत्तर पूर्व में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग के पास फतेहपुरी मोड़ पर स्थित है। इस पुरास्थल के पास हनुमान मंदिर भी बना हुआ है। यह पुरास्थल श्री राम सिंह के पुत्र श्री मामचंद सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु खेत को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पा काल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 99)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य कोई सांस्कृतिक पुरावशेष नहीं मिले हैं। एक अन्य पुरास्थल कासनी-2 गांव से लगभग 150 मीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है (ढाका 1990-91: 19) जो उत्तर हड़प्पाकालीन एवं पूर्व मध्यकालीन संस्कृति से संबंधित हैं परंतु वर्तमान समय में बस्तियां बस जाने के कारण कोई सांस्कृतिक अवशेष नहीं मिले हैं।

22. जैतपुर

अवस्थिति: (28°25'43" उ. 76°34'25" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 225.304 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

जैतपुर गांव झज्जर से लगभग 31 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग के दाईं तरफ सुबाना से जैतपुर के लिए मार्ग निकलता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

जैतपुर का पुरास्थल गांव से लगभग 300 मीटर दक्षिण-पूर्व में रेतीले टीले पर स्थित है। यह जैतपुर न्यूला सड़क मार्ग पर स्थित है। यह पंचायती भूमि में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 2 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *दादा भैयावाला खेड़ा* के नाम से जानते हैं। रेतीले टीले को हटाकर खेत को समतल बनाया जा रहा है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 85)। वर्तमान सर्वेक्षण में यह अवलोकन किया गया कि इस पुरास्थल पर हड्डियां बहुत अधिक मात्रा में मिलती हैं। इस पुरास्थल से वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान पूर्व मध्यकालीन मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में बालुका पत्थर पर निर्मित बांट तथा पकी मिट्टी से निर्मित हॉपस्कोच भी मिले हैं।

23. जटवाड़ा-1

अवस्थिति: (28°26'25" उ. 76°31'03" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 227.257 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

जटवाड़ा गांव झज्जर से लगभग 21 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

जाटवाड़ा-1 पुरास्थल गांव से लगभग 2.5 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री नंद राम के पुत्र श्री भरते व मीर सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 8 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 2 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 88-89)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

24. जटवाड़ा-2

अवस्थिति: (28°27'05" उ. 76°32'49" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 225 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

जटवाड़ा-2 पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह पुरास्थल श्री उमेद सिंह के पुत्र श्री सतपाल सिंह तथा श्री होशियार सिंह के पुत्र पूर्व सरपंच श्री रविंद्र सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल नहर के पास स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 3 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। कृषि कार्य एवं नहर बनने के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 89)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

25. कनवा

अवस्थिति: (28°31'34" उ. 76°33'51" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.066 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

कनवा गांव झज्जर से लगभग 14 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यह झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से कासनी गांव से पहले दाईं ओर से कासनी-कनवा सड़क मार्ग स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग

18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

कनवा पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर उत्तर पश्चिम में स्थित है। यह दाह संस्कार मैदान के समीप स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 3 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। इस पुरास्थल को स्थानीय लोग *रैया वाला खेत* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अत्यंत अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल एवं पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 98)। परंतु वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान केवल पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं।

26. खुड्डन-1

अवस्थिति: (28°28'32" उ. 76°36'17" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.98 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

खुड्डन गांव झज्जर से लगभग 24 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। इस गांव में रेवाड़ी रोड़ से गांव मछरौली तथा झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से गांव सुबाना से पहुंचा जा सकता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में तीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

खुड्डन-1 पुरास्थल गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में समासपुर माजरा सड़क मार्ग के दायीं ओर स्थित है। यह पुरास्थल श्री जैना के पुत्र श्री होशियार सिंह तथा श्री दयानंद के खेतों में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 8 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण यह पुरास्थल अस्त-व्यस्त है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 103-104)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

27. खुड्डन-2

अवस्थिति: (28°29'23" उ. 76°36'52" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.108 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

खुड्डन-2 पुरास्थल गांव से लगभग 2.7 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। यह पुरास्थल रेतीले टीले पर स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 20 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र से लगभग 2 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे जलालाबाद के नाम से जानते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पा कालीन एवं आरंभिक ऐतिहासिक काल तथा पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 104) परंतु वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान केवल पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पत्थर के दो लोढ़े मिले हैं।

28. खुड्डन-3

अवस्थिति: (28°28'21" उ. 76°35'20" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

खुड्डन-3 पुरास्थल गांव से लगभग 2.5 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में ढाकला जाने वाले सड़क मार्ग के बायीं तरफ स्थित है। यह पुरास्थल खिलाड़ी बजरंग पुनिया के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आस-पास के क्षेत्र की अपेक्षा 2 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे ईशरहेड़ा के नाम से जानते हैं। यह पुरास्थल रेतीले टीले पर स्थित है। सम्पूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (सिलकराम 1972: 43)। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन मृदभांडों के अतिरिक्त बालुका पत्थर पर निर्मित बांट मिले हैं।

29. कोहंद्रावली-1

अवस्थिति: (28°30'40" उ. 76°32'28" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 218.10 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

कोहंद्रावाली गांव झज्जर से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह गांव साल्हावास से लगभग 8 किलोमीटर उत्तर पूर्व में स्थित है। इस गांव में दो पुरास्थल हैं जो इसके भू- राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

कोहंद्रावली-1 पुरास्थल गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह पुरास्थल नावदा गांव को जाने वाले सड़क मार्ग के दायीं तरफ स्थित है। यह पुरास्थल ब्रह्मदत्त सिसिया के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 0.50 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बना लिया गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 106)। परंतु वर्तमान सर्वेक्षण से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

30. कोहंद्रावली-2

अवस्थिति: (28°30'35" उ. 76°32'05" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 216.103 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

कोहंद्रावली-2 पुरास्थल गांव से लगभग 800 मीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। इसका आंशिक भाग पंचायती बनी तथा शेष श्री राजराम के पुत्र श्री रामनिवास के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *बाबा समाधि वाला खेड़ा* के नाम से जानते हैं। इस पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बना लिया गया है जिससे पुरास्थल बुरी तरह से अस्त व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 106) परंतु वर्तमान सर्वेक्षण में पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही प्राप्त हुए हैं।

31. कुंजिया

अवस्थिति: (28°32'17" उ. 76°34'38" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 220.132 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

कुंजिया गांव झज्जर से लगभग 12 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। रैया गांव के बायीं ओर से कुंजिया के लिए सड़क मार्ग निकलता है तथा भिंडावास पक्षी विहार के अंदर से भी एक मार्ग गांव कुंजिया की ओर जाता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 23 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

कुंजिया पुरास्थल गांव से लगभग 500 मीटर दक्षिण- पश्चिम में एक ऊंचे रेतीले टीले पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री मंगल नंबरदार के पुत्र श्री ओमपाल सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 6 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा 3 मीटर तक ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 106-107)। परंतु वर्तमान सर्वेक्षण में पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष ही मिले हैं। इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित हॉपस्कोच मिला है।

32. मुंढेरा-1

अवस्थिति: (28°30'04" उ. 76°30'18" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 220.98 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

मुंढेरा गांव झज्जर से लगभग 22 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यह अकेहड़ी-मदनपुर गांव के बायीं ओर मातनहेल कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। नीलाहेड़ी-लड़ायन सड़क मार्ग से भी यहां पहुंचा जा सकता है। यह गांव साल्हावास से लगभग 9 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में स्थित है। इस गांव में पांच प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

मुंढेरा-1 पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यह पुरास्थल श्री मनोहर सिंह के पुत्र श्री धरमबीर सिंह तथा गूगन सिंह के पुत्र श्री मखन मास्टर के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। इस गांव के स्थानीय लोग इसे हेलेलो खेड़ा के नाम से जानते हैं। कृषि हेतु संपूर्ण पुरास्थल को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल पूर्णतः अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 117)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

33. मुंढेरा-2

अवस्थिति: (28°30'38" उ. 76°30'50" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.05 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

मुंढेरा-2 पुरास्थल गांव से लगभग 100 मीटर पूर्व में कोहंद्रावाली को जाने वाले सड़क मार्ग के बायीं ओर स्थित है। यह पुरास्थल श्री चंदगी के पुत्र श्री रामू के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *दूधिया वाला खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 21)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

34. मुंढेरा-3

अवस्थिति: (28°31'29" उ. 76°31'13" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 221.103 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

मुंढेरा-3 पुरास्थल गांव से लगभग 1.5 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित है यह चढ़वाना को जाने वाले सड़क मार्ग के समीप स्थित है। यह पुरास्थल श्री जुगलाल सिंह के पुत्र श्री राजेंद्र सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र की अपेक्षा 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *अगेथल* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है। पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 117-118)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से उत्तर हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

35. मुंढेरा-4

अवस्थिति: (28°30'04" उ. 76°30'18" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 221.041 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

मुंदेरा-4 पुरास्थल गांव से लगभग 1.2 किलोमीटर दक्षिण में नीलाहेड़ी-लड़ायन सड़क मार्ग के दायीं तरफ स्थित है। यह पुरास्थल श्री बलदेव सिंह के पुत्र श्री रामफल के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 3 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र की अपेक्षा यह लगभग 1 मीटर ऊंचा है। यहां के स्थानीय लोग इस पुरास्थल को खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल पर पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

36. मुंदेरा-5

अवस्थिति: (28°30'02" उ. 76°30'.52" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 221.305 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

मुंदेरा-5 पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में स्थित है। यह पुरास्थल श्री चंद्र सिंह के पुत्र श्री निवेह सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 6 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र की अपेक्षा 1 मीटर तक ऊंचा है। नीलाहेड़ी-लड़ायन सड़क-मार्ग से इस पुरास्थल पर पहुंचा जा सकता है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु खेत को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल पर पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त सांस्कृतिक पुरावशेषों में बहुमूल्य पत्थर जैस्पर का एक महीन टुकड़ा मिला है।

37. न्यौला

अवस्थिति: (28°28'51" उ. 76°35'33" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 223 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

न्यौला गांव झज्जर से लगभग 25 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग के दायीं ओर सुबाना गांव से न्यौला के लिए सड़क मार्ग निकलता है। यह जैतपुर गांव से लगभग 2

किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

न्यौला पुरास्थल गांव से लगभग 600 मीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री राजकरण के पुत्र श्री रामनिवास के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अत्यंत अस्त-व्यस्त हो गया है। धान की खेती हेतु खेत से मिट्टी उठाई गई है जिसके कारण पुरास्थल की दशा अत्यंत बुरी है। इस पुरास्थल पर पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित हॉपस्कोच मिला है।

38. नीलाहेड़ी

अवस्थिति: (28°29'47" उ. 76°30'05" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.37 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

नीलाहेड़ी गांव झज्जर से लगभग 23 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग के दायीं ओर स्थित है। ढाकला-चांदोल सड़क मार्ग से नीलाहेड़ी पहुंचा जा सकता है। यह साल्हावास से लगभग 6.5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

नीलाहेड़ी पुरास्थल गांव से लगभग 500 मीटर उत्तर में नीलाहेड़ी- मुंदेरा सड़क मार्ग पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री नाथूराम के पुत्र श्री रामकरण के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। पुरास्थल चिकनी मिट्टी से युक्त है। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 119)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। इस पुरास्थल से सर्वेक्षण के दौरान मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में पकी मिट्टी से निर्मित बैल की टूटी हुई मृणमूर्ति मिली है।

39. पटासनी

अवस्थिति: (28°29'54" उ. 76°40'21" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.174 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

पटासनी गांव झज्जर से लगभग 18 किलोमीटर दक्षिण में झज्जर-रेवाड़ी सड़क मार्ग पर स्थित है। दादनपुर गांव के बाईं ओर से रास्ता पटासनी के लिए निकलता है। यह साल्हावास से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

पटासनी पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री गणपत सिंह के पुत्र पूर्व सरपंच श्री गजराज के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 6 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र की अपेक्षा 3 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु खेत को समतल बनाया जा रहा है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 126)। वर्तमान सर्वेक्षण से भी इस पुरास्थल से उत्तर हड़प्पाकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त अन्य सांस्कृतिक पुरावशेषों में बालुका पत्थर पर निर्मित उत्तर हड़प्पाकालीन बांट और लोढ़े मिले हैं।

40. साल्हावास-1

अवस्थिति: (28°27'30" उ. 76°27'28" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 210 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

साल्हावास गांव झज्जर से लगभग 35 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। झज्जर साल्हावास सड़क मार्ग से यहां पहुंचा जा सकता है। इस गांव में दो प्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

साल्हावास-1 पुरास्थल गांव से लगभग 1 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री रणजीत सिंह के पुत्र श्री राम कंवर के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 4 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा लगभग 1 मीटर तक ऊंचा है। इस गांव के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु खेत को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 21)। वर्तमान सर्वेक्षण से भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त बालुका पत्थर पर निर्मित बांट मिला है।

41. साल्हावास-2

अवस्थिति: (28°27'13" उ. 76°28'48" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 200 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

साल्हावास पुरास्थल-2 गांव से लगभग 1 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। यह पुरास्थल श्री उमराव सिंह के पुत्र श्री हवा सिंह तथा मीर सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। पुरास्थल की दशा अत्यंत बुरी है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 129)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

42. समासपुर माजरा-1

अवस्थिति: (28°29'20" उ. 76°35'17" पू.)

समुद्र तल से ऊंचाई: 217.018 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

समासपुर माजरा गांव झज्जर से लगभग 16 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग के बायीं ओर से कासनी गांव से समासपुर माजरा के लिए सड़क मार्ग निकलता है। यह

साल्हावास से लगभग 16 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में तीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

समासपुर माजरा-1 पुरास्थल गांव से लगभग 1.2 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री मांगे सिंह के पुत्र श्री करणे तथा श्री हीरालाल के पुत्र श्री भगत सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 8 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष उत्तर हड़प्पाकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 130)। परंतु वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

43. समासपुर माजरा-2

अवस्थिति: (28°29'30" उ. 76°34'52" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 219.302 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

समासपुर माजरा-2 पुरास्थल गांव से लगभग 2 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री दूल्ले राम के पुत्र श्री बख्तावर सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल को समतल कर कृषि की जाती है तथा जिसके कारण पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 21-22)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

44. समासपुर माजरा-3

अवस्थिति: (28°30'19" उ. 76°35'52" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 221.829 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

समासपुर माजरा-3 पुरास्थल गांव से लगभग 2.7 किलोमीटर उत्तर में स्थित है यह पुरास्थल श्री प्रभु के पुत्र श्री जगमाल सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा

आस-पास के क्षेत्र से लगभग 3 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे *किराड़ी शहर* अथवा *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु पुरास्थल को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 131)। वर्तमान सर्वेक्षण से भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस पुरास्थल से मृदभांडों के अतिरिक्त बालुका पत्थर पर निर्मित गेंद, पकी मिट्टी का सुपाड़ी आकार का मनका मिला है।

45. सरोला

अवस्थिति: (28°27'36" उ. 76°35'31" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 220.98 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

सरोला गांव झज्जर से लगभग 19 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। झज्जर-कोसली सड़क मार्ग से सुबाना के दायीं ओर से सरोला के लिए सड़क मार्ग निकलता है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

सरोला पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री रामप्रसाद के पुत्र श्री रोशन सिंह तथा श्री सरदारा के पुत्र श्री धनीराम के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 3 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे *खेड़ा* के नाम से जानते हैं। कृषि हेतु संपूर्ण खेत को समतल बनाया गया है तथा कृषि कार्यों के कारण पुरास्थल पूर्णतः अस्त-व्यस्त हो गया है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 131)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

46. सुबाना-1

अवस्थिति: (28°28'20" उ. 76°33'54" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 223.138 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

सुबाना गांव झज्जर से लगभग 17 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में झज्जर-कोसली सड़क मार्ग पर स्थित है। यह साल्हावास से लगभग 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में दोप्राचीन पुरास्थल हैं जो इसके भू-राजस्व अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।

सुबाना-1 पुरास्थल गांव से लगभग 200 मीटर उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह पुरास्थल श्री मांगेराम के पुत्र श्री दीवान सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 7 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बना लिया गया है किंतु धान की खेती करने के कारण तथा नहर के पानी की अधिकता के कारण यह पुरास्थल लगभग जलमग्न हो गया है। पुरास्थल की दशा अत्यंत बुरी है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 22)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

47. सुबाना-2

अवस्थिति: (28°27'34" उ. 76°33'60" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 223.114 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: जलोढ़ मैदान

सुबाना-2 पुरास्थल गांव से लगभग 600 मीटर दक्षिण में नहर के पास स्थित है। यह पुरास्थल श्री रिशाल सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 5 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां के स्थानीय लोग इसे मोजामपुर खेड़ा के नाम से जानते हैं। पुरास्थल को कृषि हेतु समतल बना लिया गया है। नहर के पानी की अधिकता के कारण यह पुरास्थल लगभग जलमग्न हो गया है। पुरास्थल की दशा अत्यंत बुरी है। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (ढाका 1990-91: 22-23)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।

48. तुम्बाहेड़ी

अवस्थिति: (28°25'06" उ. 76°32'48" पू.)

समुद्र तल से ऊँचाई: 224.028 मी.

समीपवर्ती क्षेत्र: रेतीला क्षेत्र

तुम्बाहेड़ी गांव कोसली से लगभग 6 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। झज्जर कोसली सड़क मार्ग से गांव धरौली से तुम्बाहेड़ी के लिए मार्ग निकलता है। इस गांव में एक प्राचीन पुरास्थल है जो इसके भू-राजस्व क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

तुम्बाहेड़ी पुरास्थल गांव से लगभग 500 मीटर उत्तर-पूर्व में रेतीले टीले पर स्थित है। यह पुरास्थल श्री गुमानी पंडित के पुत्र श्री बलवान सिंह के खेत में स्थित है। यह पुरास्थल लगभग 10 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है तथा आसपास के क्षेत्र से 3 मीटर तक ऊँचा है। यहां के स्थानीय लोग इसे खेड़ा के नाम से जानते हैं। संपूर्ण पुरास्थल पर कृषि की जाती है तथा कृषि हेतु पुरास्थल को समतल बनाया गया है जिससे पुरास्थल अस्त-व्यस्त हो गया है। कटे हुए अनुभाग में लगभग 2 मीटर नीचे तक सांस्कृतिक अवशेष दिखाई देते हैं। इस पुरास्थल के सांस्कृतिक अवशेष पूर्व मध्यकाल से संबंधित हैं (राजेश कुमार 2016: 139)। वर्तमान सर्वेक्षण के दौरान भी इस पुरास्थल से पूर्व मध्यकालीन सांस्कृतिक अवशेष मिले हैं।